□□□□□

जनसत्ता 20 अगस्त, 2014 : हमारी सोसायटी के कुछ प□ोसी धीरे-धीरे हम पर भरोसा करने लगे हैं और उनके घरों की चाबियां हमारे घर आ जाती हैं□ □क प□ोसी सहरावतजी के बच्चे स्कूल से देर से आते हैं, तब तक सहरावत दंपति काम पर जा चुके होते हैं□ इसका समाधान यही निकला गया कि वे हमारे घर अपनी चाबी छो□ देंगे, जिसे बच्चे आते ही लेकर घर चले जा□ंगे□ मुंजाल साहब, जैन साहब और पंडितजी भी यदा-कदा चाबी छो□ ही जाते हैं□ मैं सोचता हूं कि महानगर में भी क्या ऐसी आपसदारी संभव है? जबकि अतीत में □क बार सहरावतजी के घर से दिन-दहा□ चोरी हो चुकी है□ डर तो नहीं, आशंका रहती है कि चाबी यहां रखी है और पीछे से कुछ हो न जा□!

मैं लौट कर अपने शहर चित्तौ□ग□ पहुंचता हूं□ मैं तीसरी कक्षा का विद्यार्थी था, जब मां की नौकरी के कारण हम यहां आ ग□ थे□ मम्मी नौकरी करने अपने स्कूल चली जातीं और मैं प□ने अपने स्कूल□ मेरी छुट्टी सा□ चार बजे होती और मम्मी सा□ पांच-छह बजे तक आ पातीं□ तब तक घर की चाबी प□ोसी व्यासजी के यहां रहती□ मैं आते ही चाबी लेता□ रसोई में जाकर खाने को कुछ खोजता□ फिर खा-पीकर बाहर खेलता-कूदता□ शाम होते-होते मम्मी भी आ जातीं□ यह लंबा दौर था□ तीसरी से □म□ तक का□

आदत ही ऐसी हो गई थी कि फिर चाबी संभालना झंझट लगता था□ यह डर भी शाश्वत था कि कहीं खो गई, गिर गई तो जाकर ताला तो□ना प□ेगा□ □क बार ऐसा हुआ भी था□ तब मैं चौथी-पांचवीं में रहा होऊंगा□ चाबी जेब में रखे-रखे खेलने चला गया और वह कहीं खो गई□ अब मैं निरुपाय और बेबस था□ शाम को मम्मी के आने पर प□ोसियों ने ही ताला तो□ा, तब हमारा गृह-प्रवेश हो पाया□ कई बार प□ोसियों से अनबन-अबोला भी हुआ, लेकिन चाबी को फिर भी उन्हीं की शरण मिलती रही□ यह केवल चाबी की शरण नहीं थी, बल्कि पीछे से आने वाली डाक की सुरक्षा का बीमा था और कभी किसी मेहमान के आ जाने पर चाय वगैरह का पुख्ता बंदोबस्त भी□

मैं मजाक में कहता हूं कि हमें चित्तौ□ग□ में अपनी चाबी प□ोसियों के घर रखने का कर्ज दिल्ली में चुकाना प□ रहा है□ कई बार यह काम घर वालों को नागवार लगता है, जब तेज गरमी में घर की घंटी बजती है और बाहर जाकर चाबी लौटानी प□ती है□ कई बार यह भी होता है कि दूसरी चाबी से घर वाले अपना काम चला लेते हैं, लेकिन अगले दिन की दिक्कत से बचने के लि□ सुबह-सुबह फिर घंटी बजा कर चाबी मांगते हैं□ सोचता हूं कि हमें इतनी-सी असुविधा से कोफ्त होती है, लेकिन क्या वे भी इसी संसार के लोग नहीं हैं, जिनके भरोसे लोग अपने बच्चों को छो□ कर काम पर जाते होंगे? मैं क्रेच या शिशु पालन केंद्रों की बात नहीं कर रहा□ प□ोस के आंगन में खा-खेल कर ब□े हो जाने वालों के अनेक किस्से अब भी सुनने को मिल जाते हैं□

मगर हमारी इसी सोसायटी में अनेक मित्र इस बात से दुखी रहते हैं कि उनकी अनुपस्थिति में आने वाले कोरियर और डाक वालों को प□ोसी बैरंग लौटा देते हैं□ कई बार जरूरी चिट्ठियां आकर लौट जाती हैं□ मां कहती हैं कि वे सौभाग्यशाली हैं, जिनके घरों पर चम□ी का ताला लगा है, यानी कोई न कोई बुजुर्ग घर में है□ लेकिन ऐसा सबके साथ तो संभव नहीं हो सकता□ □कल परिवार के जिस न□ दौर में हमारा समाज ब□ रहा है, वहां सामूहिकता में सबका हित है, जबकि उपभोगमूलक नई जीवन शैली हर किसी को बुरी तरह इकलखुरा बनाने में जुटी है□ किसी के निजी जीवन में ताकझांक करना अनुचित हो सकता है, लेकिन किसी के निजी तनाव और संकट में सहयोगी हो सकना क्या सच्ची मनुष्यता नहीं है?

महानगरों में रोजमर्रा के छोटे-छोटे तनाव कितने त्रासदायक हो सकते हैं, यह वह व्यक्ति भली भांति जान सकता है, जिसे मामूली काम के लि□ दस चक्कर

यहां-वहां लगाने प□ हों□ यह हो सकता है कि सहयोगी बनने की प्रक्रिया में कभी कोई अप्रिय बात भी हो जा□ या अपने लि□ भी कोई परेशानी ख□ी हो जा□ तब भी क्या आपसदारी □क जरूरी मूल्य नहीं है? कृत्रिम संकोच की फैशनपरस्ती को छो□ कर प□ोस का धर्म जानने-निभाने की यत्किंचित कोशिश भी हमारे समाज के लि□ सौहार्दपूर्ण हो सकती है□ इसके लि□ दीपावली के तोहफे के बजाय चाबी जैसी छोटी चीज भी कहीं ज्यादा आश्वस्तिदायक है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta